नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर होता भारत

भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता अब केवल हथियार और सैन्य उपकरण बनाने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि उनके रखरखाव, मरम्मत, आधुनिकीकरण और तकनीकी उन्नयन की क्षमता विकसित करने की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रही है. जबलपुर में टी-72 और टी-90 टैंकों के ओवरहॉल और अपग्रेडेशन के लिए करीब 472 करोड़ रुपये की परियोजना का भूमिपूजन इसी बदलती सोच का महत्वपूर्ण उदाहरण है. यह परियोजना न केवल भारतीय सेना की ऑपरेशनल तैयारियों को मजबूत करेगी, बल्कि मध्य प्रदेश को रक्षा विनिर्माण के उभरते केंद्र के रूप में स्थापित करने में भी मददगार होगी.

व्हीकल फैक्ट्री जबलपुर में विकसित होने वाली आधुनिक सुविधा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इससे सेना के टैंकों के रखरखाव और पुनरुद्धार की क्षमता देश में बढ़ेगी. अभी इन टैंकों के ओवरहॉल की प्रमुख जिम्मेदारी चेन्नई के निकट आवड़ी स्थित हेवी व्हीकल्स फैक्ट्री की है. जबलपुर में नई सुविधा विकसित होने से टैंकों को लंबी दूरी तक ले जाने में लगने वाला समय और लॉजिस्टिक्स लागत घटेगी तथा सेना को जरूरत के मुताबिक उन्हें अपेक्षाकृत शीघ्र ऑपरेशनल स्थिति में लाने में मदद मिलेगी. पहले चरण में हर वर्ष 12 टी-72 और टी-90 टैंकों के पूर्ण ओवरहॉल और अपग्रेडेशन की योजना है. इसके लिए आधुनिक प्लांट के साथ टेस्टिंग ट्रैक भी विकसित किया जाएगा.

आधुनिक युद्ध में ड्रोन, मिसाइल, साइबर और अंतरिक्ष तकनीक की भूमिका लगातार बढ़ रही है. इसके बावजूद टैंकों का महत्व समाप्त नहीं हुआ है. रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का यह कहना बिल्कुल उचित है कि बदलते युद्धक्षेत्र में टैंकों को नई तकनीक, बेहतर सेंसर और आधुनिक क्षमताओं से लैस करना आवश्यक है. किसी सैन्य प्लेटफॉर्म की उपयोगिता केवल उसके निर्माण से नहीं, बल्कि उसे लगातार युद्ध के बदलते स्वरूप के अनुरूप सक्षम बनाए रखने से तय होती है. इस दृष्टि से ओवरहॉल और अपग्रेडेशन की स्वदेशी क्षमता रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है. इस परियोजना का एक बड़ा लाभ रक्षा क्षेत्र से जुड़े एमएसएमई को भी मिलेगा. टैंक के रखरखाव और आधुनिकीकरण के लिए बड़ी संख्या में कंपोनेंट, तकनीकी सेवाओं और सहायक उपकरणों की आवश्यकता होती है. स्थानीय उद्योगों को इनसे जोड़ने पर जबलपुर और आसपास के क्षेत्रों में रक्षा आधारित औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हो सकता है. इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और प्रदेश में नई तकनीकी क्षमताओं का निर्माण होगा.

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत अब रक्षा क्षेत्र में खरीदार से निर्माता और धीरे-धीरे निर्यातक बनने की दिशा में बढ़ रहा है. वर्ष 2014 में करीब 46 हजार करोड़ रुपये का घरेलू रक्षा उत्पादन अब लगभग 1.80 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है. रक्षा निर्यात भी करीब एक हजार करोड़ से बढ़कर लगभग 39 हजार करोड़ रुपये हो गया है. वर्ष 2028-29 तक इसे 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक करने का लक्ष्य इस परिवर्तन की व्यापक दिशा को रेखांकित करता है.जबलपुर की परियोजना इसी बड़े परिवर्तन की एक कड़ी है. आत्मनिर्भरता का वास्तविक अर्थ तभी पूरा होगा, जब हथियारों के निर्माण से लेकर उनके रखरखाव, स्पेयर पार्ट्स, तकनीकी उन्नयन और परीक्षण तक पूरी आपूर्ति श्रृंखला देश में विकसित हो. मध्य प्रदेश के पास इसके लिए औद्योगिक क्षमता, कुशल मानव संसाधन और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति जैसे महत्वपूर्ण आधार मौजूद हैं.

जरूरत इस बात की है कि सरकार, रक्षा प्रतिष्ठान और निजी उद्योग मिलकर इस अवसर को दीर्घकालीन रक्षा औद्योगिक शक्ति में बदलें. जबलपुर की पहल इस दिशा में एक मजबूत कदम है और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को जमीन पर उतारने का प्रमाण भी.

नेपाल में भयावह जलप्रलय से सीख ले भारत

ग्लेशियर फूटने से हृदयविदारक आपदा

हिंदूकुश-हिमालय में लगभग 63,700 ग्लेशियर हैं. लेकिन इनमें से सिर्फ 18 प्रतिशत की ही निगरानी होती है. नेपाल की इस भयावह जलप्रलय के बाद सभी क्षेत्रीय देशों और भारत को अपनी निगरानी व्यवस्था तेज करनी होगी. भारत को चीन से स्पष्ट मांग रखनी चाहिए कि सीमा विवाद अपनी जगह है, लेकिन बाढ़ तथा जलवायु संबंधी जीवनरक्षक डाटा राजनीति से ऊपर रखकर तुरंत साझा किया जाना चाहिए. हिमालय की सुरक्षा सबकी साझी जिम्मेदारी है.

नेपाल-तिब्बत बॉर्डर पर 26 अगस्त की सुबह लगभग 8 बजकर 37 मिनट पर तेज झटके महसूस किए गए. अमेरिकी भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) ने इसे 4.4 तीव्रता का भूकंप माना. लेकिन कुछ ही घंटों बाद यह बात सामने आई कि यह भूकंप नहीं, वास्तव में ये झटके ग्लेशियर के एक बड़े हिस्से के बर्फ और चट्टान सहित ल्हेंदे खोला नदी में टूटकर गिर जाने की वजह से आए. ल्हेंदे खोला नदी, भोटेकोशी नदी की सहायक नदी है. भोटेकोशी नदी चीन से निकलकर नेपाल में प्रवेश करती है. इस जलप्रलय की भयावहता को देखकर पूरी दुनिया सहम गई है. इस तबाही में सैकड़ों लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी थी और 2100 से ज्यादा लोग लापता थे, जिसमें 300 भारतीय, 550 तिब्बती, 826 नेपाली तथा अन्य विदेशी लोग थे.

जानकारों को आशंका है कि इससे कहीं ज्यादा लोग इस जलप्रलय के शिकार हो सकते हैं. अभी तक इस भयावह त्रासदी में जान गंवाने वाले जिन लोगों के शव बरामद हुए हैं, उनमें से 165 नेपाली और 3 तिब्बती लोगों की पुष्टि हुई है. इस जलप्रलय के जो वीडियो सामने आए हैं, वे इस कदर रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं कि पूरी दुनिया में भय की लहर दौड़ गई है. तिब्बत-चीन सीमा पर बने ग्यिरोंग पोर्ट के 5 मंजिला इमिग्रेशन कॉम्प्लेक्स में जब लोगों ने खतरे को भांपकर भागने की कोशिश की, तो पलक झपकते मलबे की लहरों ने कॉम्प्लैक्स को अपने में समेटते हुए ताश के महल की तरह चकनाचूर कर दिया.

तिब्बत से निकला यह भयावह जलप्रलय नेपाल को अपने आगोश में समेटते हुए अब भारत की तरफ आगे बढ़ रहा है. 27 अगस्त की सुबह 11 बजे तक नेपाल की त्रिशूली नदी से होते हुए जलप्रलय की बाढ़ बिहार में बहने वाली गंडक नदी तक पहुंच गई थी, जिसमें लोगों ने देखा है कि मलबे के साथ भैंस और फ्रिज तक बह रहे थे. 26-27 अगस्त की रात 12 बजे नेपाल की ओर से करीब 150 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया, जिसके लिए बगहा स्थित गंडक बैराज के 36 गेट खोल दिए गए.

नेपाल की इस तबाही से भारत में बिहार के कई जिलों को अलर्ट पर रखा गया है, जिनमें पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, गोपालगंज, सारण, मुजफ्फरपुर और वैशाली के साथ सीतामढ़ी और शिवहर को भी अलर्ट कर दिया गया है. बिहार के बाद बाढ़ का यह पानी यूपी के महराजगंज और कुशीनगर को भी अपनी चपेट में ले सकता है. इसलिए यहां भी अलर्ट जारी किया गया है. इस भयावह त्रासदी के बाद भारत नेपाल को राहत सामग्री की दो खेप भेज चुका था.

भारतीय वायु सेना के विमानों से भेजी गई दूसरी खेप में 37.5 टन की राहत सामग्री दवाईयां और खाद्य पैकेट शामिल थे. जबकि इसके पहले भारत ने बुधवार की रात ही सी-130 जे विमान के जरिए 10 टन त्वरित राहत सामग्री भेजी थी, जिसमें प्रमुखता से जरूरी दवाईयां थीं. जिस तरह से हिमालय की बर्फ तेजी से पिघल रही है, वह सिर्फ भविष्य में पानी का संकट नहीं खड़ा करेगी, उसके पहले ग्लेशियर लेक आउटब्रस्ट फ्लड अर्थात हिम नदीय झीलों के फटने से अचानक आने वाली बाढ़ का जबरदस्त खतरा भी पैदा हो गया है.

-लोकमित्र गौतम

निजी क्षेत्र में भी मिसाइल निर्माण

भारत ने अपने ब्रम्होस मिसाइल का निर्यात फिलीपीन्स, वियतनाम और इंडोनेशिया को किया है. भारत के रक्षा उद्योग जब अनुसंधान के साथ उच्चकोटि के रक्षा उत्पाद बनाएंगे तो उन्हें निरंतरता से बड़े ऑर्डर मिलने लगेंगे.

रक्षा अनुसंधान व विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित परंपरागत मिसाइल की तकनीक निजी कंपनियों को हस्तांतरित करने का केंद्र सरकार का निर्णय विशेष महत्व रखता है. आधुनिक युद्ध प्रणाली की जरूरतें पूरी करने तथा स्वदेशी शस्त्र प्रणाली विकसित करने की दिशा में यह उल्लेखनीय कदम है. अमेरिका-ईरान युद्ध तथा रूस-यूक्रेन युद्ध से यह बात सामने आई है कि संघर्ष के दौरान मिसाइल तेजी से खत्म हो जाते हैं और ऐसे समय तुरंत नए मिसाइलों का निर्माण करना संभव नहीं हो पाता. क्योंकि उनके पुर्जे व अन्य उपकरण तत्काल नहीं जुटाए जा सकते. इसलिए यदि डीआरडीओ मिसाइल तकनीक निजी कंपनियों को देगा तो वह स्वदेश में उसके पुर्जे व उपकरण निर्मित कर लेंगी. इससे विदेश से आयात पर निर्भरता कम हो जाएगी तथा युद्धकाल में सप्लाई या लॉजिस्टिक्स में व्यवधान नहीं आएगा. इससे रक्षा उत्पादन व निर्यात को भी बढ़ावा मिलेगा. भारत रक्षा सामग्री निर्माण व निर्यात के क्षेत्र में अपना महत्व स्थापित करता जा रहा है. 2013-14 में भारत ने 686 करोड़ रुपये की रक्षा सामग्री का निर्यात किया था. 2025-26 में यह निर्यात बढ़कर 38,424 करोड़ रुपये का हो चुका है. भारत ने अपने ब्रम्होस मिसाइल का निर्यात फिलीपीन्स, वियतनाम और इंडोनेशिया को किया है. भारत के रक्षा उद्योग जब अनुसंधान के साथ उच्चकोटि के रक्षा उत्पाद बनाएंगे तो उन्हें निरंतरता से बड़े ऑर्डर मिलने लगेंगे. अमेरिका में रक्षा सामग्री या हथियार बनाने के सर्वाधिक कारखाने हैं. अब युद्ध में ड्रोन की उपयोगिता बढ़ती जा रही है. निजी क्षेत्र के उद्यमियों को तकनीक देने से रक्षा सामग्री का उत्पादन बढ़ेगा. यह मेक इन इंडिया के अंतर्गत उल्लेखनीय कदम होगा. रक्षा सामग्री बनाने वाले स्टार्टअप को भी इससे बढ़ावा मिलेगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

मध्य क्षेत्र की डायरी

जनविश्वास... या फिर आत्मविश्वास की खोज

संदीप चंसौरिया

प्रदेश सरकार ने मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान शुरू किया है. सरकारी तौर पर इसकी मंशा बिल्कुल साफ है. जनता की शिकायतों का तत्काल निराकरण. सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन. लोक सेवाओं की समय-सीमा में उपलब्धता. अभियान 7 अगस्त से शुरू हुआ. 8 जनवरी 2027 तक चलेगा. हर शुक्रवार को अभियान दिवस होगा. अफसर एसी रूम से निकलकर ग्राउंड पर होंगे. मुख्यमंत्री भी प्रदेश के किसी भी हिस्से में पहुंचेंगे. प्रभारी मंत्री प्रभार के जिले में होंगे. सरकार का दावा है वह जनता से सीधे समस्याएं सुनेगी. मौके पर समाधान भी करेगी. लापरवाही पर एक्शन भी होगा. सुनने में कवायद सुशासन की दिशा में एक गंभीर पहल लगती है. लेकिन, राजनीति में केवल घोषणा नहीं, घोषणा का समय भी मायने रखता है. विधानसभा चुनाव में अभी ढाई साल बाकी हैं. ऐसे में स्वाभाविक सवाल है. सरकार को जनता तक पहुंचने की जरूरत क्यों महसूस हुई?

शिकायतें पहले से थीं

जनता की शिकायतों के समाधान के लिए सीएम हेल्पलाइन, जनसुनवाई जैसी व्यवस्थाएं पहले से मौजूद हैं. बावजूद इसके सरकार को अब एक अलग अभियान पर निकलना पड़ा. यदि व्यवस्थाएं पहले से प्रभावी थीं तो विशेष अभियान की जरूरत क्यों पड़ी? यदि सिस्टम प्रभावी नहीं है, यानी प्रशासनिक पकड़ कमजोर हुई है? दरअसल, जनविश्वास अभियान एक ओर प्रशासन को जनता के प्रति जवाबदेह बनाने की कोशिश है. दूसरी ओर अघोषित स्वीकारोक्ति भी है कि प्रशासनिक तंत्र में कहीं न कहीं ऐसी खामियां हैं, जिन्हें ठीक करने की जरूरत महसूस हुई.

लाडली बहना से परे भी बहुत कुछ

प्रदेश की राजनीति में महिलाओं के बीच सरकार की पहुंच का एक बड़ा आधार लाडली बहना योजना है. लेकिन किसी भी सरकार के लिए केवल एक लोकप्रिय योजना के सहारे लंबे समय तक राजनीतिक समर्थन बनाए रखना आसान नहीं होता. महंगाई, रोजगार, किसानों की समस्याएं, युवाओं की अपेक्षाएं, स्थानीय स्तर पर भ्रष्टाचार और सरकारी दफ्तरों में कामकाज जैसे मुद्दे लगातार राजनीतिक विमर्श को प्रभावित करते हैं. माना जा सकता है यहीं जनविश्वास अभियान की भूमिका महत्वपूर्ण है. सरकार अभियान के बहाने स्थानीय स्तर पर प्रशासन के प्रति नाराजगी को दूर करने में जुट गई है. यानी सरकार यह समझ रही है कि लाभार्थी तक पैसा पहुंचाना और नागरिक का सरकार पर भरोसा कायम करना, दो अलग-अलग बातें हैं.

असली चुनौती जनता की धारणा

सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं है कि वह कितने दौरे करती है या कितनी बैठकें आयोजित होती हैं. असली चुनौती जनता की धारणा बदलने की है. राजनीति में सरकार की छवि योजनाओं की सूची से नहीं बनती. वह इस बात से बनती है कि आम नागरिक को सरकारी दफ्तर में कितना सम्मान मिलता है. उसका काम कितनी जल्दी होता है. उसे शिकायत के लिए कितने चक्कर लगाने पड़ते हैं. जरूरत के समय सरकार उसके कितने करीब होती है. यही कारण है कि जनविश्वास अभियान सरकार के लिए केवल प्रशासनिक परीक्षा नहीं है. यह राजनीतिक विश्वसनीयता की भी परीक्षा है. यदि अभियान के बाद वही शिकायतें फिर लौट आती हैं. वही फाइलें अटकती हैं. जनता को फिर वही पुराने चक्कर लगाने पड़ते हैं. तब सरकार के पास दोबारा जनता के बीच जाने का मौका भी नहीं होगा.

चुनाव दूर, तैयारी शुरू

चुनाव भले ही ढाई साल दूर हों, लेकिन राजनीति में ढाई साल बहुत लंबा समय नहीं होता. सत्ता पक्ष के लिए यह समय अपनी कमजोरियां पहचानने और उन्हें सुधारने का है. विपक्ष के लिए सरकार की कमियां खोजने और उन्हें राजनीतिक मुद्दे में बदलने का. जनविश्वास अभियान इसी राजनीतिक पृष्ठभूमि में शुरू हुआ दिखता है. इसलिए इसे चुनावी तैयारी से पूरी तरह अलग भी नहीं किया जा सकता. सरकार जनता के बीच जा रही है, उसकी शिकायतें सुन रही है, प्रशासन को मैदान में उतार रही है और जिलों की रैंकिंग कर रही है. यह सब सुशासन का हिस्सा है, लेकिन यही प्रक्रिया चुनावी रणनीति के लिए भी उतनी ही उपयोगी है. सरकार के सामने अब असली चुनौती जनविश्वास मांगने की नहीं, जनविश्वास साबित करने की है. क्योंकि, जनता के बीच जाना आसान है. जनता की बात सुनना भी आसान है. मुश्किल यह है कि सुनी हुई बात पर कार्रवाई हो. उसका असर जनता को दिखाई दे. जनविश्वास की सफलता का फैसला सरकारी रिपोर्ट नहीं करेगी. आने वाले समय में जनता करेगी. यही फैसला तय करेगा कि यह अभियान सुशासन की मिसाल बना या चुनावी तैयारी का एक और अध्याय.

निशानेबाज

सरकार का रुख लाजवाब, कोई सवाल न पूछो जनाब

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हम आपसे जनहित में कुछ सवाल पूछना चाहते हैं. हमें उम्मीद है कि आप उनका उत्तर अवश्य देंगे. इसके बाद हम उपप्रश्न करेंगे, उसका भी जवाब आपको देना पड़ेगा. प्रश्नोत्तर का यह सिलसिला यूं ही चलता जाएगा.'

हमने कहा, 'सवालों का कभी अंत नहीं होता. इसलिए आप स्वावलंबी बनकर अपने प्रश्नों का हल खुद ही खोजिए. पहले अपने मन से पूछिए, फिर अंतरात्मा से. मौन रहिए, मेडिटेशन कीजिए. कुछ न कुछ जवाब खुद ही मिल जाएगा.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आप हमें टाल रहे हैं. प्रश्न हल करने की बजाय हमें छल रहे हैं. हमारी प्रश्नवाचक शक्ल देखिए और हमारे सवाल को बवाल समझकर मत ठुकराइए. हमारी जिज्ञासा पर अनुकूल रवैया अपनाइए. हमारा प्रश्न खास है जिसे लेकर मन में उठ रहा संत्रास है. आप जवाब देंगे, इसका पूरा विश्वास है.'

हमने कहा, 'सीधी बात है कि संसद में भी है प्रश्नकाल बंद, इसलिए छोड़ दीजिए सवाल पूछने का बेतुका छंद. हम आपकी जिज्ञासा पर लगा रहे प्रतिबंध, रखिए अपनी बुद्धि मंद, चुपचाप खाइए शकरकंद. सवालों के सागर में मत डुबोइए अपनी नैया. प्रश्नों के भंवर में न फंसते हुए बन जाइए कुशल खिवैया.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, समझ जाइए हमारी चालाकी. हमें लगी है प्रश्न पूछने की बीमारी. आप पर उत्तर देने की जिम्मेदारी. आप निशानेबाज हैं तो लगाइए परफेक्ट निशाना. सिर्फ उतना बताइए जितना आपने समझा और हमने जाना. अपने देश में लोकतंत्र है और सवाल-जवाब ही इसका असली मंत्र है. बढ़ रहा कॉकरोचों का असंतोष, जेन जी में आ रहा भरपूर जोश. सरकार है खामोश. हो रही है पेपरलीक, माहौल बिल्कुल नहीं ठीक! सवालों को लेकर समझिए हमारे ज्वलंत जज्बात, इसलिए करने आए आपसे मुलाकात. गिरता जा रहा रुपया, बढ़ती बेरोजगारी, इससे निपटने की क्या है तैयारी? न तो आप पक्ष हैं न हम विपक्ष, न आप धर्मराज युधिष्ठिर, न हम प्रश्न पूछने वाले मायावी यक्ष! चल रहा सवालों का सावन मास, मन में है बहुत आस!'

हमने कहा, 'हम समझ रहे हैं आपकी कठिनाई लेकिन सवाल पूछती सिर्फ ईडी या सीबीआई. सुन लीजिए स्व. कवि मधुपजी की कविता जिसमें उन्होंने लिखा- वकील साहब, सुना है आप बात-बात में पहेलियां बूझते हैं. कोई आपसे प्रश्न करता है तो आप उत्तर न देकर उसी से प्रश्न पूछते हैं. उत्तर मिला- जजसाहब, सच तो यह है कि अब भले लोगों का जमाना ही नहीं रहा. भला कहिए, मैं उत्तर न देकर प्रश्न पूछता हूं, यह आपसे किसने कहा?'

शब्द-सागर 12363

- डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. सहज, सरल, सुगम 4. एक तरह का पत्थर जिस पर चोट मारने से आग निकलती है 8. मिठाई बनाकर बेचने वाला 10. वानर 11. जो अपनी प्रतिष्ठा को ही धन समझता हो (सं.) 12. किसी काम में या किसी निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए किसी का नाम लिखा जाना 15. उपरांत 17. चार वेदों में से तीसरा वेद 18. विवाह, शादी (सं.) 20. बहुत बड़ा राजा, गुरु ब्राम्हण आदि के लिए आदरसूचक शब्द 22. दासी, कुलटा, स्त्री 23. तैसा, वैसा 25. जीत, विजय 26.मन को भाने वाला

ऊपर से नीचे

1. किसी वस्तु या अंग पर धीरे-धीरे हाथ फेरना 2. भूमि जोतने का एक प्रसिद्ध उपकरण, समस्या का समाधान 3. अन्न का दाना जो भूनने से फूल गया हो 5. सिरकटा धड़ 6. साहित्य में वर्णित कामदेव के अस्त्र 7. हाथ, किरण (सं.) 9. विश्वास, धर्म, अच्छी नीयत 13. मांस खाने वाला 14. कोठरी 16. दया करने योग्य 19. नाता, संबंध 20. आक का पौधा 21. यत्न 24. परिषद, गोष्ठी, समिति 25. लोग, प्रजा

Solution 12362

	किं		था	ती			के
अं	शु	मा	न		र	मे	श
त	क	ली		प्री		ज	
रि			अ	ति	श	बा	जी
क्ष	ण		ला		मा	न	व
		त	प	स्वी			
न	ज	ला		कृ	मि		व
स	ब	क		ति	ल	ह	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा से कष्ट, व्यर्थ वाद विवाद होगा. भोग विलास में धन व्यय होगा. मतभेद में वृद्धि होगी. धन संकट का सामना करना पड़ेगा. वर्ष के मध्य में स्थाई लाभ का योग है. पारिवारिक चिन्तायें कम होंगी. कार्य में थकान महसूस होगी. सफलता के योग है. वर्ष के अन्त में व्यापार व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी. व्यवसाय में वृद्धि होगी. शत्रु पक्ष परास्त होगा. आर्थिक दशा में सुधार होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियोंकी आर्थिक दशा में सुधार होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय में वृद्धि होगी. अत्याधिक परिश्रम से कार्य मेंसफलता मिलेगी. कर्क राशि के व्यक्तियोंको परिश्रम व व्यस्तता रहेगी. आत्म विश्वास मेंवृद्धि होगी. सिंह राशि केव्यक्तियों को मनोरंजक स्थल की सैर होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष पर संकट का सामना करना होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को यात्रा में कष्ट होगा, विवाद से बचना चाहिये. भोग विलास में धन व्यय होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यापार से लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, स्वस्थ्य, बचपनमें स्वास्थ्य कुछ नरम गरम रहेगा. मधुर और कोमल चंचल रहेगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. विद्या के क्षेत्र में उन्नति करेगा. वाहन का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

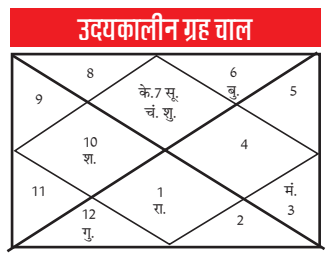

पंचांग

रा.मि. 07 संवत् 2083 भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा शनिवासरे दिन 9/32, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रात 4/30, सुकर्मा योगे दिन 8/21, कौलव करणे सू.उ. 5/42, सू.अ. 6/18, चन्द्रचार कुम्भ रात 10/23 से मीन, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, चांदी, कपूर, चांवल, धान, के भाव में जोरदार तेजी की चाल चलेगी. चांदी, सोना, वायदा मार्केट में 20से 40 रूप्ये की तेजी होगी. भाग्यांक 3188 है.

मेष- परेशानी को नजरअंदाज न करें. आपसी मामलों को सावधानी से हल करें. आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी. पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा.

वृषभ- दाम्पत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी. राज्यपक्ष के कार्यों में सफलता मिलेगी. आकस्मिक प्रवास सुखद एवं शुभफलदायक रहेगा. अतिथि आगमन का योग है.

मिथुन- व्यवसायिक निर्णय सोच समझकर करें. वाहन चलाते समय सावधानी रखें. आय से अधिक व्यय होगा. मित्रता उपयोगी रहेगी.लाभ के योग प्रबल है.

कर्क- संतान के कार्यों पर नजर रखें. सुख समृद्धि के कार्य बनेंगें. धार्मिक सत्संग से प्रसन्नता होगी. सामाजिक कार्यों में सम्मान मिलेगा.

सिंह- शिक्षा संबंधी कार्यों में रूचि रहेगी. शांति रखकर कार्य करने की कोशिश करें. अधिकारी वर्ग के सहयोग से विवाद हल होगा. आकस्मिक कार्य से प्रवास संभव है.

कन्या- आजीविका में अपने लाभ के लिये प्रयत्नशील रहें. समय का दुरूपयोग न करें. आकस्मिक धन लाभ होगा. विशिष्टजनों के सहयोग से अभीष्ट की प्राप्ति होगी.

तुला- आपकी बुद्धिमानी से समस्या का समाधान संभव है. सत्कार्यों में मन लगेगा. खानपान की अनियमितता रहेगी. अधिक श्रम से कष्ट होगा. अतिथि आगमन होगा.

वृश्चिक- कामकाज के अवरोध दूर होंगे. धार्मिक कार्य से संतोष मिलेगा.लेनदेन में सफलता मिलेगी. शारीरिक सुख तथा प्रसन्नता रहेगी. संयम से कार्य करें.

धनु- अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर कार्य करें. अनियमितता दूर होगी. समारोह में सम्मिलित होने के अवसर प्राप्त होंगे. भूमि, भवन, आदि में सफलता मिलेगी.

मकर- दूसरों पर बहुत अधिक विश्वास न करें. स्वविवेक से विचार कर निर्णय करें. भाग्यवर्धक समाचार मिलने का योग है. धार्मिक कार्य के प्रति रूचि रहेगी.

कुम्भ- नए संबंध लाभकारी रहेंगे, व्यवसायिक सहयोग मिलेगा. नौकरी में व्यस्तता रहेगी. मित्रों कुटुम्बियों के सहयोग से समस्या का समाधान होगा.

मीन- घर में मांगलिक कार्य की चर्चा होगी. आमदानी के अनुरूप खर्च करें. परिश्रम अधिक करना होगा. मानसिक रूप से कुछ तनाव रह सकता है.

SUDOKU 7495

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7494

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1